B.A- part-II
Sub.- pol. science.
paper-III (Indian political system).

Topic - "Nature of Indian political system."

(भारतीय राजनीतिक व्यवस्था की प्रकृति या स्वरूप)

Dr. Dhananjay Jha.
Assistant professor.
(Guest faculty/part time)
L.S. College, Muz.
Mob- 8210688019.

विषय प्रवेश :-

जब हम 'भारतीय राजव्यवस्था' की बात करते हैं तो उसका अभिप्राय होता है कि शासन का स्वरूप (Nature) क्या है? शासन का ध्येय क्या है? नीति-निर्माण किस प्रकार होता है? कौन-कौन से ऐसे तत्व हैं, जो हमारे नीति-निर्माण को प्रभावित करते हैं? राज कार्यों में जनता की हिस्सेदारी किस सीमा तक है? साथ ही जनता के मूल्य दृष्टिकोण और चरित्र का स्वरूप क्या है? कहने का आशय यह है कि राजव्यवस्था में न तो पदों का विन्यास होता है और न ही कोरा संवैधानिक ढाँचा। भारतीय राजनीति दिन-प्रतिदिन नये मोड़ ले रही है और नित नये आयाम उजागर हो रहे हैं। जिससे राज व्यवस्था का स्वरूप भी अवश्य ही निखर रहा है।

दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि हमने एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था की स्थापना की है जिसमें सामाजिक लाभ व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के साथ सुरक्षित रखा जा सके और साथ ही साथ एक नवीन व अधिक सभ्य समाज की स्थापना सुनिश्चित हो सके। हमारी भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में सामंजस्यता है तथा इसमें समानता एवं स्वतंत्रता की काफी संभावनाएँ निहित हैं।

Scanned with CamScanner

(2) लोकतांत्रिक व्यवस्था (democratic system) एक विकासशील देश के लिए तीव्र विकास, जनसाधारण के लिए सम्मान तथा बन्धुता के विकास हेतु एक अमूल्य निधि तथा विश्वसनीय नीव हो सकती है। प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था कुछ निश्चित मूल्य धारणा की हुई होती है। इसकी शक्ति इन्हीं मूल्यों में निहित होती है तथा वहाँ की जनता इससे प्रतिबद्ध (committed) रहती है।

भारतीय राजनीतिक व्यवस्था (Indian political system) के स्वरूप/प्रकृति का उल्लेख/वर्णन हम निम्नांकित बिन्दुओं के माध्यम से कर सकते हैं —

1. संसदीय शासन प्रणाली (Parliamentary Government System)
2. संसदीय सर्वोच्चता (Parliamentary Supermacy)
3. विधि का शासन (Rule of Law)
4. एकात्मकता का पुट (Unitary bias)
5. प्रधान मंत्री की प्रधानता
6. गणतन्त्रीय व्यवस्था (Republic system)
7. संघीय प्रणाली (federal system)
8. संविधान में मूल अधिकारों का उल्लेख (Provisions of fundamental Rights)
9. न्यायालय की सर्वोच्चता (Supermacy of Judiciary)
10. समाजवादी व्यवस्था
11. पंथनिरपेक्ष व्यवस्था
12. बहुदलीय व्यवस्था
13. परम्परा और आधुनिकता का मिश्रण
14. विविधता में एकता
15. गठबन्धन की राजनीति
16. लोकतांत्रिक व्यवस्था।

Scanned with CamScanner

①

Date 27/4/20

time - 3:00 PM
to 3:50 PM

B.A- part—II, Sub- Pol. Sc.
paper — III (Indian political system)
(भारतीय राज व्यवस्था)

Topic - Nature of the Indian political system.
(भारतीय राजनीतिक व्यवस्था का स्वरूप | प्रकृति)

DR. Dhananjay Jha.
Asst. professor
(Guest faculty | part time)
deptt. of L.S. College,
Muzaffarpur
Mob- 8210688019.

परिचय (Introduction) : ⟹

भारतीय राजनीतिक व्यवस्था के स्वरूप या प्रकृति को समझने से पूर्व सर्वप्रथम हम 'व्यवस्था (system)', राजनीतिक व्यवस्था (political system) और भारतीय राजनीतिक व्यवस्था (Indian political system) को समझाने का एक सफल प्रयास करें। इन तीनों टॉपिक को समझने के उपरान्त इसके प्रकृति | स्वरूप को समझने में काफी सहुलियत | सुगमता होगी।

राजनीतिक व्यवस्था
(Political system)
दो शब्दों के मेल से बना है _

↓ ↓

राजनीतिक (Political) + व्यवस्था (system).

अब राजनीतिक व्यवस्था (political system) को समझने से पूर्व हमें 'व्यवस्था' शब्द को भली-भाँति समझना होगा तभी हम राजनीतिक व्यवस्था के बारे

Scanned with CamScanner

में समझना उचित होगा।

व्यवस्था का अर्थ (Meaning of System) :⟹

व्यवस्था शब्द भौतिक विज्ञानों से लिया गया है। भौतिक विज्ञानों के अन्तर्गत "व्यवस्था का अर्थ अपरिभाषित अन्तःक्रियाओं के समूह से है जिसकी सीमाएं निश्चित की जा सके।" दूसरे शब्दों में, शाब्दिक व्युत्पत्ति के आधार पर हम इसके अर्थ को इस प्रकार समझ सकते हैं कि व्यवस्था का अर्थ है- जटिल सम्बन्धित वस्तुओं का समग्र समूह, विधि संगठन, पद्धति के निश्चित सिद्धान्त तथा वर्गीकरण का सिद्धान्त। कहने का आशय यह है कि एक व्यवस्था संगठित होनी चाहिए अथवा उसमें संगठन का समावेश हो और उसके अंग एक-दूसरे से सम्बन्धित होने चाहिए।

उपर्युक्त तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर हम कह सकते हैं कि यदि किसी भी स्थान पर हमें संगठन देखने को मिलता है अथवा जहाँ से संगठित होने गुण हमें दिखाई पड़ता है और उसके सभी अंग एक-दूसरे से सम्बद्ध (Affiliated) हैं, तो वहाँ हमें आवश्यक तौर पर 'व्यवस्था' (System) विद्यमान मिलेगा। उदाहरण के तौर पर 'सामाजिक व्यवस्था', 'राजनीतिक व्यवस्था' 'लोकतांत्रिक व्यवस्था' को समझ सकते हैं।

किसी भी व्यवस्था में चाहे वह पारिवारिक हो, सामाजिक हो, राजनीतिक हो या लोकतांत्रिक हो, उसमें तीन प्रकार के गुण समावेशित (मिले) रहते हैं-

— (i) व्यापकता (Comprehensive)
— (ii) अन्योनाश्रय (perpendicular to each other)
— (iii) सीमाएं (Range)

अतः व्यवस्था = व्यापकता + अन्योनाश्रय + सीमाएं

Scanned with CamScanner